ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तीन सर्टिफिकेट

सर्टिफिकेट शब्द का भी अपना महत्व है। किसी व्यक्ति विशेष की पहचान कराते वक्त उन्होंने जीवन में क्या-क्या किया है, उनमें क्या योग्यतायें हैं, सर्टिफिकेट ही उसे प्रमाणित करने का साधन है।

आप देखिये, कोई भी कहता है कि मैं इस विद्या में निपुण हूँ, लेकिन जब तक उसकी परीक्षा न हो और सर्टिफिकेट न मिले, तो हमें क्या मालूम कि यह निपुण है या नहीं। सर्टिफिकेट ही इस बात को प्रमाणित करता है कि सचमुच इसने ये विद्या पढ़ी है। कम से कम इसकी इतनी हाज़िरी है और उसके बाद परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता आ रहा है, यह इसकी डिग्री है, फर्स्ट क्लास में या सेकण्ड क्लास में, वह प्रमाण पत्र दिखाता है कि मैंने परीक्षा पास की है, इस डिग्री तक की है। प्रमाण पत्र से यह भी मालूम पड़ता है कि भले ही उसने हर विषय में फर्स्ट क्लास लिया या नहीं, परंतु परीक्षा में टोटल रिज़ल्ट उसका फर्स्ट क्लास रहा है, अतः यह प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहा है। बाबा (परमात्मा) ने सिर्फ यह नहीं कहा कि संतुष्टता का गुण धारण करो, बल्कि संतुष्टता का सर्टिफिकेट प्राप्त करो। उनको धारण करने के लिए कहा है, लेकिन साथ ही बाबा ने विशेषकर संतुष्टता का सर्टिफिकेट लेने के लिए कहा है। इतने सारे गुण हैं, हम देखते हैं कि हर गुण का अपना महत्व है। अगर कोई भी गुण न हो तो हमारा सारा पुरुषार्थ बिखर जाता है। और सबमें से बाबा ने संतुष्टता को 'सर्टिफिकेट' का नाम दिया है।

- ब्र. कु. गंगाधर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में इन सर्टिफिकेट्स पर महत्व दिया गया है- 1. स्वयं से संतुष्ट, 2. दूसरे हमसे संतुष्ट, 3. और शिव बाबा हमसे संतुष्ट। कोई पूछता है कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय से क्या डिग्री-सर्टिफिकेट मिलता है? तो हम कहेंगे कि संतुष्टता के ये तीन तरह के सर्टिफिकेट मिलते हैं। यही डिग्री है इस विश्वविद्यालय की। अगर इन तीनों को ही हम एक शब्द में कहना चाहें तो वो शब्द है 'संतुष्टता'।

तो बात हो रही थी सर्टिफिकेट की, अगर आपने तीनों सर्टिफिकेट ले लिये, तो अन्य सभी विषयों में पास विद ऑनर होंगे। बाबा सिर्फ पास होने के लिए नहीं कहते, पास विद ऑनर होने के लिए कहते हैं। इसलिए अगर पास विद ऑनर होना है तो आपको इन तीन सर्टिफिकेट्स को लेना होगा। हमें थोड़ा गहराई में जाकर देखना होगा कि इस संतुष्टता के गुण में क्या ऐसी बात है जिसकी वजह से बाबा ने सर्टिफिकेट तक शब्द दे दिया है! अब इस ओर हम आपका ध्यान खिंचवाना चाहते हैं।

इसके साथ-साथ दूसरों के साथ मैत्री का भी बहुत महत्व है। आप देखेंगे कि मैत्रीगुण पर भी बाबा ने बहुत कहा हुआ है। संतुष्टता के लिए जैसे बाबा ने कहा कि स्वयं भी संतुष्ट रहो, दूसरे भी आपसे संतुष्ट रहें और बाबा भी आपसे संतुष्ट रहे। संतुष्टता के ये तीन आयाम हैं। केवल स्व-संतुष्टता से कोई फायदा नहीं। मैं स्वयं से बहुत संतुष्ट हूँ, ये कहना अपने आप को मिया मिट्ठू समझना है, अर्थात् अपने आप को धोखे में रखना है। हम समझते हैं या नहीं, हम ठीक चल रहे हैं या नहीं, यह हमारे साथ रहने वाले, हमारे सेवा साथी कहें तब माना जायेगा कि हम संतुष्ट हैं और हमसे अन्य भी संतुष्ट हैं। एग्ज़ामिनर(परीक्षक) हमेशा दूसरा होता है ना! अपने आप परीक्षा दे ले और अपने आप घोषित कर ले कि हम फर्स्ट क्लास पास हो गये, तो कोई मानेगा? नहीं। परीक्षक आपके पेपर्स देखे, चेक करे, वो मार्क्स दे, और जब वो कहे कि ये फर्स्ट क्लास में पास हुआ है, तब माना जायेगा। कई बार इंसान भी गलती या पक्षपात कर बैठता है, लेकिन बाबा तो न्यायकारी है, वो सबकी कर्म कहानी जानता है। उससे भी सर्टिफिकेट लेना ज़रूरी है। इस प्रकार तीनों सर्टिफिकेट ज़रूरी है। इसी तरह से मैत्री है। बाबा ने मुरलियों में अनेक प्रकार से इसके महत्व को दर्शाया है। अब समय है कि इन तीनों सर्टिफिकेट के सम्बंध में हमें अपने आप में जाँच करनी होगी कि मैंने तीनों सर्टिफिकेट हासिल कर लिये या उसमें कोई कमी है? और अगर कमी है तो कहाँ तक कमी है? तो आइए अब इस ओर अपनी सारी शक्तियों को आत्मसात करके उसे सही और स्पष्ट करें तथा अपनी साधना को उस पर केन्द्रित करें। तब हम जो चाहते हैं कि हमारे चेहरे और चाल-चलन से प्रत्यक्षता हो, तो वो अवश्य ही होगी। तो विद्यालय के मूलतः ये तीन सर्टिफिकेट अपने आप में लेकर संतुष्ट हों, तभी कह सकते हैं कि इस विश्व विद्यालय में ये डिग्री प्राप्त होती है।

सोते-जागते योगी जीवन हो तो माया की छाया पड़ नहीं सकती

बोल-चाल, बैठना-उठना सब रॉयल हो। सदा अच्छा वातावरण बनाकर रखना, यह भी श्रेष्ठ कर्म की निशानी है। जो भी आपके कमरे में आये, कहाँ भी दो मिनट मिले, खुश हो जाये।

अन्तर्मुखता और साइलेंस दोनों की आपस में गहरी मित्रता है। ज़रा भी बाहरमुखता है बोलने, देखने, सुनने में, तो साइलेंस का अनुभव नहीं होता है। साइलेंस में अनुभव होता है कि हुक्मी हुक्म चला रहा है, करनकरावनहार करा रहा है। यज्ञ की सेवा अर्थ किसी को कोई ड्यूटी मिली है, किसी को कोई ज़िम्मेदारी है, वो अच्छी सम्भालता है ना। अन्दर अटेन्शन है - मैं कौन, मेरा कौन? हर प्रकार की सेवा में साथ मिलता है, मेरे को कुछ करने का है। सारी लाइफ में देखा है हमने कुछ नहीं किया है, परन्तु स्थिति पर अटेन्शन रहा है। यह बाबा की हमारे ऊपर नज़र है या बाबा की नज़रों में मुझे रहना है, यह भावना है। दृष्टि बड़ी अच्छी लगती है तो हमारी दृष्टि महासुखकारी हो। बाबा की दृष्टि ने महासुखकारी बनाया है, फिर आपस में भी हमारी ऐसी महासुखकारी दृष्टि हो। कभी भी किसको देख, अन्दर सूक्ष्म में भी नाराज़ न रहें। चेक करना है कोई मेरे से नाराज़ न रहे और न मैं किससे नाराज़ रहूँ। राज़ी रहना, राज़ी करना, यह भी सेवा है ना, सच्चाई और प्रेम से। सतयुग में दैवी जीवन होगी, परन्तु यह जो योगी जीवन है ना, उसी के आधार से वह होगी।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

अभी हमारी योगी जीवन है, ऐसी फीलिंग है सबको? सोते-जागते योगी जीवन है, यह कभी भूले नहीं। किसी भी हालत में माया की छाया न पड़े, इसकी सम्भाल करो। कभी भी पड़ सकती है, परन्तु अटेन्शन से नहीं पड़ती है। कोई की मेरे से अच्छी बात नहीं हुई तो मुझे अच्छा नहीं लगता, क्या करूँ, समझ में नहीं आता, यह ख्याल आया मन में, मुख से भी वर्णन किया तो स्थिति क्या रही? थोड़ा भी इस तरह से स्थिति रही तो यह क्या है? आखिर कोई हल या तरीका निकलेगा या ऐसे ही चलेगा क्या! इस प्रकार के ख्याल आना, इसको क्या कहा जाये? जो दिल कहता है कि वायब्रेशन इतना पॉवरफुल हो जाये, वह नहीं होगा। यह तो होता ही है ना, ऐसे कहना भी योगी लाइफ नहीं है। कोई नियम को पालन करते हैं तो उसे अच्छा माना जाता है। तो नियम का भी बल है, अटेन्शन का भी बल है। अपना जीवन साधारणता में कभी नहीं लाना चाहिए। बोल-चाल, बैठना, उठना सब रॉयल हो। सदा अच्छा वातावरण बनाकर रखना, यह भी श्रेष्ठ कर्म करने की निशानी है। जो भी आपके कमरे में आये, कहाँ भी दो मिनट मिले, खुश हो जाये। क्योंकि समय, संकल्प सफल करना किसका काम है? जिसको श्रेष्ठ स्थिति बनानी है, एक मिसाल बनना है। कोई खर्च नहीं है, कमाई है। बाबा का बनने से बहुत कमाई हुई है। हमको यहाँ ही अच्छा कर्म करना है। यह अपने लिए भावना रखो।

कन्ट्रोलिंग पॉवर तब आयेगी जब मन विचार सागर मंथन में बिज़ी होगा

अमृतवेले और नुमाशाम के समय बाबा से बातें करने के लिए पर्सनल टाइम मिलता है। भले संगठन में बैठे हैं लेकिन हरेक की रूचि होती है, हर एक अपने-अपने अनुसार बाबा से बातें करता है। किसको निराकारी रूप की ज़्यादा आती है, किसको आकारी रूप की आती है तो जो चाहिए मतलब अपने आपको उसमें अनुभव करते रहेंगे, यह टाइम हमारा ऐसा है। टाइम को भी व्यर्थ नहीं गंवाना, सफल करना है। वो बाबा बताते ही रहते हैं। बाबा ने विचार सागर मंथन करना भी सिखलाया है। बाबा से बातें करने का टाइम भी अच्छा है। पर्सनल अपनी कोई भी समस्या है तो उसको बाबा को देना और जवाब लेना। ऐसे काफी टाइम हमको बीच-बीच में मिलता है, जो हम कर सकते हैं। मतलब फालतू और बातें नहीं सोचो। जो अपने पुरुषार्थ की बातें हैं, उसमें ही रहने का सोचो। कोई भी बात दिल में है या पुरुषार्थ के लिए कुछ शक्ति चाहिए, उसके लिए भी बाबा से मिलो। बाबा से रूह-रिहान भी कर सकते हैं। हमारा तो मन का ही पुरुषार्थ है और बाबा ने रूह-रिहान की बातें भी बहुत सुनाई हैं। तो अगर अकेले होते हो तो रूह-रिहान बाबा से करो या अपने आपसे करो, वो भी बाबा ने बतला दिया है। मतलब अपने को बिज़ी रखो, खाली दिमाग फिर पता नहीं कहाँ-कहाँ जाता है। दिमाग कन्ट्रोल में ज़रूर हो। अपने आप भी अपने को प्रोग्राम देना, यह भी आदत ज़रूरी है। जब शुरू में ब्रह्मा बाबा में बाबा आया था, उस समय बाबा ऐसे मस्ती में मस्त रहता था, जो देखते ही लगता था कि बाबा बहुत डीप, बाबा से रूह-रिहान कर रहा है। तो आप भी अपने मन को ऐसे बिज़ी रखो। हमारे टॉपिक्स कितने निकले हैं, कोई भाषण ही तैयार करो, किसी भी टॉपिक पर लिखो तो उसमें भी कितना टाइम लग जाता है। बिज़ी हो जायेंगे। एक ही बात सोचो, बस बाबा की महिमा करते रहो, वो भी एक ही बात के ऊपर नहीं सोचना, वैराइटी में मज़ा आता है। वैराइटी करने में अच्छा है। मतलब मन को कन्ट्रोल में रखो, ऐसे नहीं टाइम चला गया, सोचा नहीं... ऐसे मन में कुछ सोच तो चलता ही है लेकिन कायदेमुज़िब नहीं, इसलिए अपने मन को कन्ट्रोल में ज़रूर रखना। यह कन्ट्रोलिंग पॉवर हमको नई-नई इन्वेन्शन निकालने में मदद करती है क्योंकि मन को काम तो चाहिए ना, खाली मन भी तो ठीक नहीं है ना! तो भिन्न-भिन्न अनुभव हों। लक्ष्य रखने से फर्क पड़ता है, मन कन्ट्रोल में रहता है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

जो अपने पुरुषार्थ की बातें हैं, उसमें ही रहने की सोचो। कोई भी बात दिल में है या पुरुषार्थ के लिए कुछ शक्ति चाहिए, उसके लिए भी बाबा से मिलो।

रोज़ अमृतवेले उठ अपने सिर पर बाप की छत्रछाया का छत्र लेना है

बाबा हम बच्चों को रोज़ हर तरह से पुश करता। सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

आज अमृतवेले आँख खुलते ही एक आवाज़ सुनी जैसे कोई ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है, पुकार रहा है। इधर-उधर देखा कुछ नज़र नहीं आया। इतने में ही साढ़े तीन का रिकॉर्ड बजा, फिर उठकर बाबा के पास, बाबा की मीठी यादों में बैठी। ऐसी भासना आई जैसे बाबा बार-बार कह रहा है कि बच्ची अब बहुत जल्दी वो दिन आने वाला है, जब तुम्हारे विजय के नगाड़े बजेंगे। दुनिया देखती ही रह जायेगी, तुम उड़के चले जायेंगे। तुम शक्तियों की सिद्धि कहो, सफलता कहो, विजय कहो, अब बहुत ज़ोर से सारी दुनिया में यह आवाज़ उठनी है। इसलिए सबको बोलो कि कोई भी बीता हुआ न देखे, आगे-आगे बढ़ते जाओ, यह क्या होगा, कैसे होगा यह न सोच सब आगे-आगे बढ़ते जाओ। ऐसे ही सुबह के टाइम कई बार बाबा कुछ प्रेरणा दे देता है। बाबा कहते कि तुम्हें सिद्धि स्वरूप बनना है तो तब मैं बाबा से पूछती हूँ कि क्या सिद्धियों को सामने लाना है, क्या सिद्धियों का आह्वान करना है, या सिद्धि स्वरूप बनना है? या सिद्धि स्वरूप हैं? उसी घड़ी आता कि मैं ये सूक्ष्म संकल्प भी क्यों उठाऊं, मुझे सिद्धि स्वरूप बनना है। क्यों न समझूं, मैं हूँ ही सिद्धि स्वरूप। न हूँ तो संकल्प उठाऊं। शक हो तो पुरुषार्थ करूं। हमारे मस्तक पर लिखा है चमकती हुई मणियां हो, मणि का अर्थ ही है चमकना। कल्प पहले भी चमक वाली मणि थी, आज भी हूँ, हमें नशा रहता है हम हैं ही बाबा की चमकती हुई मणियां, सिद्धि स्वरूप मणियां। हम कोई झूठे पत्थर नहीं हैं, हम तो सच्चे पन्ना और माणिक हैं, तब तो हमारे ऊपर पुखराज परी, नीलमपरी का गायन है। हर बात में मैं अपने को सफलतामूर्त, विजयी देखती हूँ। मैं कभी दिलशिकस्त नहीं होती। अमृतवेले ऐसी मीठी-मीठी रूह-रिहान बाबा से चलती है। बाबा हम बच्चों को रोज़ हर तरह से पुश करता। सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का। यह कैसे? सवेरे जब मैं बैठती तो ऐसे लगता जैसे ऊपर से किसी चीज़ पर सर्व प्रकार की लाइट के फोकस दिये जाते वैसे सारे वरदानों का फोकस बाबा मुझे देता और मस्तक चमकता जाता - गोल्डन होता जाता। इन जटाओं पर जैसे स्नो फॉल की तरह लाइट का फॉल बह रहा है, ऐसे मैं स्वयं के साथ-साथ सबको देखती हूँ। सवेरे-सवेरे बुद्धि दिव्य, देहभान से परे सतोप्रधान होती, तो उस टाइम बाबा से सहज ही बुद्धि जुट जाती। वह घड़ियां ऐसे अनुभव होती जैसे सारे दिन के लिए बाबा सबकुछ कर देता है, तब कहा अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का।

मैं देखती हूँ अमृतवेले बाबा के सामने जैसे अनेक बच्चे बैठे हैं - बाबा सबके ऊपर हाथ फिराता जाता, यह कोई भक्ति नहीं, बाबा हम सबके ऊपर सिर से पांव तक हाथ घुमा देता कि बच्चे तुम सदा छाया में रहना, माया का तुम्हारे ऊपर कोई वार न हो। इसको कहते हैं कदम में पदम, बाबा अपनी लाइट-माइट से माया की नज़र उतार देता है। हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं, बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती।